प्रातः क्लास 4-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबायाद है?

ओमशान्ति। मीठे2 तुम बच्चे हो लक्की सितारे। तुम जानते हो हम शान्तिधाम को भी याद करते हैं। बाप को भी याद करते हैं, बाप को याद करने से हम पवित्र बनकर घर जावेंगे। यहां बैठे यह ख्याल करते हो ना। बाप और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। जीवन-मुक्ति को तो दुनिया में कोई जानते ही नहीं। वे सभी पुरु० करते हैं मुक्ति के लिये। परन्तु मुक्ति का अर्थ नहीं समझते। कोई कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। फिर आवेंगे ही नहीं। उनको यह पता नहीं है हमको इस चक्र में जरूर आनाही है। अभी तुम बच्चे इन बातों को समझते हो। तुम बच्चों को मालूम है हम स्वदर्शनचक्रधारी लक्की सितारे हैं। लक्की कहा जाता है तकदीरवान को। अभी तुम बच्चों को तकदीरवान बाप ही बनाते हैं। जैसे बाप वैसे बच्चे होते हैं। कोई बाप साहुकार होते, कोई बाप गरीब भी होते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको तो बेहद का बाप मिला है। जो जितना लक्की बनना चाहे वह बन सकते हैं। जितना साहुकार जो बनना चाहे बन सकते हैं। बाप कहते हैं जो चाहिए सो पुरुषार्थ से लो। सारा पुरुषार्थ पर मदार है। पुरुषार्थ कर जितना ऊंच पद लेना चाहिए ले सकते हो। ऊंच ते ऊंच पद है यह (ल०ना०)। जितना तुम बाप को याद करेंगे, और चार्ट भी अच्छा रखेंगे चार्ट भी जरूर रखनाहै। क्योंकि तमो प्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना ही है। बुधु बनकर ऐसे ही नहीं बै०ना है। बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग अर्थात पुरानी दुनिया अभी पूरी होती है। बाप आते ही हैं नई दुनिया सतोप्रधान दुनिया में ले जाने। वह है बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला। समझाते हैं सतोप्रधान बनने से ही तुम बेहद कासुख पा सकेंगे। सतो बेचारे बनेंगे तो कम सुख, रजो बनेंगे तो उससे कम सुख। हिसाब सारा बाप बतला देते हैं। अभी तुम तमोप्रधान हो तो तुमको जरा भी खुशी नहीं है। वहां तुम कितना खुश रहते हो। अथाह धन तुमको मिलता है। अथाह सुख मिलते हैं। बेहद के बाप से वरसा पाने का और कोई उपाय है नहीं। जितना बाप को याद करेंगे याद से ही आटोमेटकली देवीगुण भी जरूर आवेंगे। सतोप्रधान बनना है। तो देवीगुण जरूर चाहिए। अपनी जांच आपे ही करो। जितना ऊंच पदवी लेने चाहो ले सकते हो अपने पुरुषार्थ से। पढ़ाने वाला टीचर तो बैठा हुआ है। अक्षर ही दो हैं मन्मनाभव, मध्याजीभव। बेहद के बाप को पहचान जाते हो, वह बेहद का बाप ही बेहद की नालेज देने वाला है। पतित से पावन बनने का रास्ता भी वह बेहद का बाप ही समझाते हैं। तो बाप जो समझाते हैं वह कोई नई बात नहीं। गीता में भी लगा हुआ है, आटे में लून मिसल है। अपने को आत्मा समझो। देह के सभी धर्म भूल जाओ। तुम शुरू में नंगे थे। अभी अनेक मित्र सम्बन्धियों के बन्धन में आये हो। सभी हैं तमोप्रधान। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। तुम जानते हो हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। फिर मित्र सम्बन्धि भी सभी पवित्र होंगे। जितना जो कल्प पहले सतोप्रधान बना है उतना ही फिर बनेंगे। उनका पुरुषार्थ ही ऐसा होगा। अभी फालोकिसको करना चाहिए। गायन है ना फालो फादर। जैसे यह बाप को याद करते हैं, पुरुषार्थ करते हैं उनको फालो करो। पुरुषार्थ कराने वाला तो बाप है। वह तो पुरुषार्थ करते नहीं हैं। वह पुरुषार्थ कराते हैं फिर कहते हैं मीठे2 बच्चों फालो फादर। गुप्त फादर फादर है ना। फादर गुप्त है फादर तो देखने में आते हैं। यह अच्छी रीत समझने का है। ऐसा ऊंच पद पाना है तो बाप को अच्छी रीत याद करो। जैसे यह फादर याद करते हैं। यह फादर ही सबसे ऊंच पद पाते हैं। यह बहुत ऊंच था। फिर इनके ही बहुत जन्म के अन्त में मैं प्रवेश करता हूं। यह अच्छी रीत याद करो। भूला नहीं। माया भूलाती बहुतों को है। तुम कहते हो हम नर से ना० बनें। वह भी बापयुक्ति बताते हैं। कैसे तुम बन सकते हो। यह भी जानते हैं सभी तो स्क्युरेट फालो नहीं करेंगे। एमआबजेक्ट बाप बतलाते हैं फालो फादर। अभी का ही गायन है। बाप भी अभी तुम बच्चों को ज्ञान देते हैं। सन्यासियों के फालोअर्स कहलाते हैं परन्तु वह तो रांग है ना। फालोअर्स=करते ही नहीं। वह सभी हैं ब्रह्मज्ञानी तत्वज्ञानी। उनको ईश्वर ज्ञान नहीं देते। तत्व अथवा ब्रह्मज्ञानी कहलाते हैं। परन्तु तत्व अथवा ब्रह्म उन्हों को ज्ञान नहीं देते। वह सभी हैं शास्त्रों का ज्ञान। यहां तुमको बाप ज्ञान देते हैं। जिसको ज्ञान सागर कहा जाता—

है। यह अच्छी रीतनोट करो। तुम भूल जाते हो। यह दिल अन्दर अच्छी रीत विचार करने की बातें हैं। बापरोज2 कहते हैं मीठे2 बच्चे अपने को आत्मा समझो मुझ बाप को याद करो। अभी वापस जाना है। पतित तो जा न सकेंगे। यो योगबल से पवित्र होना है या फिर सजा खाकर जावेंगे। सभी का हिसाब किताब चुकुत होना है। जरूर फिर वजमा भी करना है। दुःख का खाता चुकुत करना है। और फिर जो बनायें हैं उनको जमा करना है सतो प्रधान में। बाप ने समझाया है तुम आत्माएं असल में परमधाम के रहने वाले हो। फिर यहां सुख और दुःख का पार्ट बजाया है। सुख का पार्ट है रामराज्य में। दुःख का पार्ट है रावण राज्य में। रामराज्य स्वर्ग को कहा जाता है। वहां कम्पलिट सुख है। गाते भी हैं स्वर्गवासी और नर्कवासी। तो यह अच्छी रीत धारण करना है। जितना2 तमो प्रधान से सतोप्रधान बनते जावेंगे उतना अन्दर में तुमको खुशी भी होगी। तुम रजो में द्वापर में थे तो भी खुश थे तुम इतने दुःखी विकारी नहीं थे। यहां तो अभी कितने विकारी दुःखी हैं। तुम अपने बड़ों को देखो कितने विकारी शराबी होते हैं। असर कर के पुरुष ही बहुत शराबी और कामी होते हैं। शराब पीना और छी छी होना। इसमें हीपैसे उड़ा देते हैं। यह बाबा जो गोरा था फिर सांवरा बना है। यह अनुभवी बहुत है। शराब बहुत खराब चीज है। सतयुग में तो यह है ही शुध आत्माएं। फिर नीचे उतरते2 बिल्कुल ही छी छी हो जाते हैं। असलिये उनको रौरव नर्क कहा जाता है। शराब ऐसी चीज है जो झगड़ा मारा-मारी नुकसान करने देरी नहीं करते। उस समय मनुष्य की बुधि जैसे भ्रष्ट रहती है। माया बड़ी दुस्तर है। बाप सर्वशक्तिवान है सुखदेने वाला। वैसे फिर माया बहुत दुःख देने वाली है। कलियुग में मनुष्य की हालत क्या हो जाती है। एकदम जड़-जड़ीभूत। कुछ भी समझते नहीं। जैसे कि बिल्कुल ही पत्थर बुधि। यह भी ड्रामा है ना। किसके तकदीर में न है तो फिर ऐसी बुधि बन जाती है। बाप ज्ञान तो बड़ा सहज देते हैं। बच्चे बच्चे कह समझाते रहते हैं। माताएं भी कहती हैं हमको 5हैं लौकिक बच्चे और एक है पारलौकिक बच्चा जो हमको सुखधाम ले चलने आये हैं। बाप भी समझते हैं तो बच्चा भी समझते हैं। जादूगरनी ठहरी ना। बाप तो जादूगर तो बच्चे भी जादूगर बन जाते हैं। कहते हैं बाबा हमारा बच्चा भी है। हिर जाते हैं। तो बाप को पलो कर ऐसा बनना चाहिए। स्वर्ग में तो इनका राज्य था ना। शास्त्रों में यह बातें हैं नहीं। यह भक्ति मार्ग के शास्त्रों की भी ड्रामा में नूंध है। फिर भी होगी। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। पढ़ाने वाला टीचर तो चाहिए ना। किताब थोड़े ही टीचर बन सकती। किताब ही टीचर बन जाये तो फिर टीचर की दरकार ही न रहे। यह किताब आदि सतयुग में होते ही नहीं। गीता में भी कृष्ण भगवानुवाच है। तो कृष्ण टीचर हुआ ना। टीचर ही पढ़ावेगा सिर्फ भूल यह कर दी है जो नाम बदली कर दिया है। कितनी बड़ी भूल है। बुधि कितनी मलीन है। कहते हैं गीता का भगवान कृष्ण है या शिव बाबा है, कोई भी हो, हमको मतलब शास्त्र पढ़ना है। कृष्ण भी वही है भगवान भी वही है, ठिकर भितर सभी वही है। बाप बैठ समझाते हैं तुम अपने आत्मा को तो समझते हो ना। आत्माओं का बाप भी जरूर है। जब कोई आते हैं तो सभी कहते हैं हिन्दु मुस्लिम भाई2 अर्थ कुछ भी नहीं समझते। भाई2 का अर्थ समझाना चाहिए। जरूर एक बाप भी होगा। इतनी पाई पैसे की समझ भी न रही है। इनमें भी कोई समझ न थी। यह कहते थे हम सब से जास्ती बेसमझ थे। समझदार भी नम्बरवन फिर बेसमझ भी नम्बरवन बनते हैं। भगवानुवाच यह बहुत जन्मों का अंत का जन्म है। अर्थ कितना साफ बताते हैं। कोई ग्लानी नहीं करते हैं। बाप तो रास्ता बताते हैं। नम्बरवन सो लास्ट, गोरा सो सांवरा बनते हैं। तुम भी समझते हो हम गोरे थे फिर ऐसे बनेंगे। बाप को याद करने से ही यह बनेंगे। अभी हम वेश्यालय में हैं। इनको कहा जाता है रावण राज्य। वेश्यालय। राम राज्य को कहा जाता है शिवालय। सीता का राम उसने तो त्रेता में राज्य किया। इसमें भी समझ की बात है। दो कला कमकही जाती है। सतयुग है ऊंच ते ऊंच। उनको भी याद करते हैं। त्रेता और द्वापर को इतना याद नहीं करते हैं। सतयुग है नई दुनिया और कलियुग है पुरानी दुनिया। 100% सुख और 100% दुःख। वह त्रेता और द्वापर है सेमी। इसलिये मुख्य

6-12-52

सतयुग और कलियुग गाया जाता है। बापसतयुग स्थापन कर रहे हैं। अभी तुम्हारा काम है पुरुषार्थ करना। या सत युग निवासी बनेंगे या त्रेतानिवासी बनेंगे। द्वापर में तो फिर नीचे उतरते हो। हो फिर भी देवी देवता धर्म के। परन्तु पतित होने कारण अपने को देवी देवता कहला नहीं सकते। तो बाप मीठे2 बच्चों को रोज2 समझाते हैं। मुख्य बात है ही मन्मनाभव की। तो तुम्हीं नम्बरवन बनते हो। 84 का चक्र लगाकर लास्ट में आते हो। फिर नम्बरवन में जाते हो। तो अभी बेहद के बाप को याद करना है। वह है बेहद का बाप। पुरुषोत्तम संगम युग पर ही बेहद का बाप आकर 21 पीढ़ी स्वर्ग का सुख तुमको देते हैं। पीढ़ी जब पूरी होता है तब तुम अपनी शरीर छोड़ देते हो। योगबल है ना। कायदा ही ऐसा रचा हुआ है। इसको कहा जाता है योगबल। वहां ज्ञान की बात नहीं रहती। आटोमेटिक कलो तुम बूढ़े होते हो। वहां कोई विकार आदि नहीं होते। एवर हैल्दी रहते हो। वहां दुःख का नाम निशान नहीं रहता। फिर थोड़ी2 कला कम होती है। अभी बच्चों को पुरुषार्थ करना है। बेहद के बाप से बेहद का वरसा पाने का। पास विथ आनर होना चाहिए। सभी तो ऊंच नहीं पा सकते। जो सर्विस नहीं करते हैं वह क्या पद पावेंगे। म्युजियम में बच्चे कितनी सर्विस करते हैं। विगर बुलावे लोग आ जाते हैं। उनको विहंग मार्ग की सर्विस कहा जाता है। पता नहीं इससे भी कोई और विहंग मार्ग की सर्विस निकले। दो चार मुख्य चित्र तो जरूर साथ में हो बड़े2। त्रिमूर्ति गोला झाड़ सीढ़ी यह तो हर जगह बहुत बड़े2 हो। जब बच्चे होशियार होंगे तब तो सर्विस होगी ना। होने की है। गांव2 में भी सर्विस करनी है। माताएं भल पढ़ी लिखी नहीं है। परन्तु यह तो बहुत ही सहज है। बाप का परिचय देना है। आगे फिमेल पढ़ती नहीं थी। मुसलमानके राज्य में एक आंख खोलकर बाहर निकलती थी। सुहेनी2 होती सारा मुंह ढक लेती थी कि कोई की नजर न पड़े। अभी पेट आदि नंगा कर लेती है। आंखें क्रिमनल बन जाती हैं। सतयुग में क्रिमनल आई होती ही नहीं। वहां तो देखो क्या हाल है। सिन्ध में एक दाहिर राजा था। (उनकी हिस्ट्री) स्त्रीयों के पिछाड़ी राजाओं ने अपनी राजाई गंवाई है। कितना पैसा खर्च करते हैं। कामी पुरुष अक्सर शराबी भी होते हैं। बाबा बहुत अनुभवी है। बाबा कहते हैं मैं यह सभी नहीं जानता हूं। मैं तो ऊपर में रहता हूं। यह सभी बातें यह बाबा तुमको सुनाते हैं। यह अनुभवी है। मैं तो मन्मनाभव की बातें सुनाता हूं। और सृष्टि चक्र का राज समझाता हूं। जो यह नहीं जानते। यह अपना अनुभव अलग समझाते हैं। मैं इन बातों में नहीं जाता। मेरा पार्ट है सिर्फ तुमको रास्ता बताना। मैं बापटीचर सुप्रीम हूं। टीचर बन तुमको पढ़ाता हूं। बाकी इसमें कृपा आदि की कोई बात नहीं। पढ़ाता हूं फिर साथ में ले जाने वाला हूं। इस पढ़ाई से ही सदगति होती है। मैं आया हूं तुमको ले चलने। शिव की बारात गाई हुई है। शंकर की बारात नहीं होती। शिव की बारात है सभी आत्माएं। यह सभी हैं भक्तियां। मैं हूं भगवान। तुम ने हमको बुलाया ही है पावन बनाकर साथ में ले जाने। तो हम तुम बच्चों को साथ ले ही जायेंगे। हिसाब किताब चुक्त कराकर।

बाप घड़ी2 कहते हैं मन्मनाभव। बाप को याद करो तो वरसा भी जरूर याद पड़ेगा। विश्व की बादशाही मिलती है तो इसके लिये पुरुषार्थ भी ऐसा करना है। तुम बच्चों को तकलीफ कोई नहीं देता हूं। जानता हूं तुमने बहुत दुःख देखी है। अभी तुमको कोई तकलीफ नहीं देता हूं। भक्ति मार्ग में आयु भी छोटी होती है। अकाल मृत्यु हो जाती है। कितना या हुसेन बचाते हैं। कितना दुःख उठाते हैं। दिमाग ही खराब हो जाता है। अब बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करते रहो। स्वर्ग का मालिक बनना है तो देवी गुण भी धारण करनी है। पुरुषार्थ हमेशा ऊंच बनने का किया जाता है, हम ल0ना0 बनें। बाप कहते हैं मैं सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनों धर्म स्थापन करता हूं। वह नापास होते हैं। इसलिये क्षत्री कहा जाता है। युध के मैदान में है ना। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।